मिशन 'किसानशाला'

लखनऊ जिले के बख्शी का तालाब स्थित रैथा गाँव में **14 अगस्त 2022** को सामाजिक संस्था आईकेयरइंडिया एवं प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउंडेशन फॉर साइंस एण्ड सोसाइटी, लखनऊ के साथ मिलकर शुरू किये गये मिशन 'किसानशाला' में "एकीकृत प्राकृतिक खेती से किसानो के सतत विकास में एक कदम" के कार्यक्रम के अंतर्गत संयुक्त रूप से किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण किसान और स्थानीय महिलाए बड़े उत्साह से शामिल हुए। प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन से प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह, डॉ आर डी त्रिपाठी और डॉ मधु भारद्वाज ने और आई केयर इंडिया के तरफ से इंजिनियर अनूप गुप्ता उपस्थित रहे। आई केयर इंडिया के संस्थापक श्री अनूप गुप्ता ने बताया की इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानो के साथ जमीनी स्तर पर काम करके उनको गुणवत्ता पूर्ण कृषि सामग्री और अन्य जैविक सामग्री तथा तकनीक एवं तकनीकी प्रशिक्षण देना हमारा उद्देश्य हैं| जिससे किसानो को कमलागत में अधिक मुनाफा हो सके|

प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन की तरफ से डा. राणा प्रताप सिंह जी ने गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कीसंयुक्त राष्ट्र संघ का उद्देश्य है, कि पोषक भोजन सबको पर्याप्त मात्रा में लगातार उपलब्ध हो सके| यह एक बड़ी चुनौती है, और बढती आबादी तथा विषाक्त होते कृषि पर्यावरण के साथ हम जलवायु परिवर्तन जैसी एक बड़ी समस्या से जूझ रहे है| जलवायु परिवर्तन की वजह से जैविक तंत्र पर अधिक असर होता है, और कृषि उनमे से एक हैं|कृषि में सभी चीजे जीवों से जुडी है, और उन सभी पर मौसम की मार असर करेगी| किसान अधिक मेहनत करने पर भी आय नहीं बढ़ापा रहाहैं जिससे युवा किसान खेती छोड़ रहे हैं| किसानो को कृषि कार्य से जोड़े रखना और उसे जीविका का साधन बनाकर उनके साथ लगातार लम्बे समय तक बने रहना एक बहुत बड़ी चुनौती हैं| डा०सिंह ने किसानो से आग्रह किया की कोई भी समस्या रातो-रात हल नही हो सकती, उसके लिए किसानों को थोडा धैर्य रखना होगा| हम सबको मिलकर इसके लिए लगातार काम करना होगा और किसान भाइयो और युवाओं को कृषि वैज्ञानिको एवं सरकारी योजनाओ का समर्थन लेना होगा| कृषि में अकुशल, अर्धकुशल और कुशल युवा किसानों एवं शिक्षित शहरी युवाओ को रोजगार देने की अपार क्षमता हैं| आने वाले समय में कृषि एक बहुत बड़े सेक्टर के रूप में विकसित होगा| जैविक या प्रकृतिक या पारिस्थितिकीय खेती में रोजगार एवं धारणीयता की क्षमता ज्यादा हैं| स्थानीय स्तर पर हम उसमें पड़ने वाले अदानों का उत्पादन कर सकते हैं, और उसका विपणन कर सकते है, क्योंकि इसके लिए बहुत ज्यादा कुशलता की जरूरत नहीं हैं|उन्होंने कहा कि जैव तकनिकी का कृषि में बहुत अच्छा योगदान हैं, क्योंकि खेती से जुडी हुई सभी चीजे जैविक हैं और हमारे स्वास्थ्य से जुडी हैं| अगर आप जहरीला खाना खाते है, तो हमारे शरीर को बहुत नुकसान होता हैं| जैव-तकनीकी से हम कोई भी चीजे उगा सकते है, बेच सकते हैं, इसमे हम प्रोफ़ेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन की ओर से जो भी सहयोग चाहिए हम देने के लिए तैयार हैं|

प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह ने किसानों को खेती पर ज्ञान चर्चा करते हुए किसानो को उनकी आय बढाने के सम्बन्ध में सरल भाषा में जानकारी दी । मधुमक्खी पालन, मछली पालन, तथा मल्टिलेयरिंग खेती आदि के बारे में किसानो को अवगत कराया, जिससे उनकी आय में वृधि हो सकती है ।

ई अनूप गुप्ता मे बताया की किसान अपने खेत के चारों तरफ मेढ़ पर झाड़ीदार एवम कटीले पौधें लगाकर खेतो को सुरक्षित एवम अतिरिक्त आमदनी भी की जा सकती है।

रैथा में किसानशाला की शुरुआत

लखनऊ जिले के बख्शी का तालाब स्थित रैथा गाँव में 12 जुलाई 2022 को सामाजिक संस्था आईकेयरइंडिया एवं प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउंडेशन फॉर साइंस एण्ड सोसाइटी, लखनऊ के साथ मिलकर शुरू किये गये मिशन 'किसानशाला' में "एकीकृत प्राकृतिक खेती से किसानो के सतत विकास में एक कदम" के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मनोज कुमार सिंह 'कृषि उत्पादन आयुक्त' उत्तर प्रदेश ने किसानशाला का शुभारम्भ किया | इस अवसर पर जिलाधिकारी श्री सूर्यपाल गंगवार व मुख्य विकास अधिकारी श्रीमति रिया केजरीवाल भी उपस्थित थे | इस कार्यशाला में प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह, जनरल सेक्रेटरी, प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन, लखनऊ व डीन शैक्षणिक बीबीएयू, लखनऊ एवं प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन, से श्री कृष्णानंद सिंह एवं अन्य लोगों ने भागीदारी की | सरकारी संस्थानों के वैज्ञानिक, प्रशासनिक तथा कृषि अधिकारियो के साथ-साथ बड़ी संख्या में ग्रामीण किसान और स्थानीय महिलाओ ने भाग लिया | आई केयर इंडिया के संस्थापक श्री अनूप गुप्ता ने बताया की किसानशाला का उद्देश्य किसानो के साथ जमीनी स्तर पर काम करके उनको गुणवत्ता पूर्ण कृषि सामग्री और अन्य जैविक सामग्री तथा तकनीक एवं तकनीकी प्रशिक्षण देना हमारा उद्देश्य हैं | जिससे किसानो को कम लागत में अधिक मुनाफा हो सके |

श्री मनोज कुमार सिंह, मुख्य अतिथि, कृषि उत्पादन आयुक्त उ०प्र० शासन ने किसानो को संबोधित करते हुए कहा कि वह किसानो के प्रयासों का पूरा समर्थन करेंगे, उनका यह भी कहना था, कि राज्य सरकार और केंद्र सरकार का यही प्रयास है कि कैसे किसानो की लागत कम की जाय और वार्षिक आय बढाने के साथ-साथ पूरे वर्ष कृषि से किसानो को आमदनी होती रहे | उसके लिये ग्रामीण युवाओं को कृषि के लिए लगातार साथ-साथ काम करना होगा, जिसके लिए कृषि परिदृश्य में बदलाव की जरूरत है | सिर्फ गेहूँ चावल की खेती करके यह बदलाव नहीं लाया जा सकता, बल्कि उसके लिए किसानो को वर्ष में 300 दिनों तक खेतो में काम करके लगातार अनेको तरह की फसलें उगानी होगी | उसके साथ हमें नये-नये तरीको से नयी-नयी किस्मों की मदद से खेती करनी होगी और पूरे साल परिश्रम करना होगा तब जाकर सफलता मिलेगी |

प्रोफेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन की तरफ से डा. राणा प्रताप सिंह जी ने गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा की संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्देश्य है, कि पोषक भोजन सबको पर्याप्त मात्रा में लगातार उपलब्ध हो सके | यह एक बड़ी चुनौती है, और बढती आबादी तथा विषाक्त होते कृषि पर्यावरण के साथ हम जलवायु परिवर्तन जैसी एक बड़ी समस्या से जूझ रहे है | जलवायु परिवर्तन की वजह से जैविक तंत्र पर अधिक असर होता है, और कृषि उनमे से एक हैं | कृषि में सभी चीजे जीवों से जुडी है, और उन सभी पर मौसम की मार असर करेगी | किसान अधिक मेहनत करने पर भी आय नहीं बढ़ा पा रहा हैं जिससे युवा किसान खेती छोड़ रहे हैं | किसानो को कृषि कार्य से जोड़े रखना और उसे जीविका का साधन बनाकर उनके साथ लगातार लम्बे समय तक बने रहना एक बहुत बड़ी चुनौती हैं | डा० सिंह ने किसानो से आग्रह किया की कोई भी समस्या रातो-रात हल नही हो सकती, उसके लिए किसानों को थोडा धैर्य रखना होगा| हम सबको मिलकर इसके लिए लगातार काम करना होगा और किसान भाइयो और युवाओं को कृषि वैज्ञानिको एवं सरकारी योजनाओ का समर्थन लेना होगा | कृषि में अकुशल, अर्धकुशल और कुशल युवा किसानों एवं शिक्षित शहरी युवाओ को रोजगार देने की अपार क्षमता हैं | आने वाले समय में कृषि एक बहुत बड़े सेक्टर के रूप में विकसित होगा | जैविक या प्रकृतिक या पारिस्थितिकीय खेती में रोजगार एवं धारणीयता की क्षमता ज्यादा हैं | स्थानीय स्तर पर हम उसमें पड़ने वाले अदानों का उत्पादन कर सकते हैं, और उसका विपणन कर सकते है, क्योंकि इसके लिए बहुत ज्यादा कुशलता की जरूरत नहीं हैं | उन्होंने कहा कि जैव तकनिकी का कृषि में बहुत अच्छा योगदान हैं, क्योंकि खेती से जुडी हुई सभी चीजे जैविक हैं और हमारे स्वास्थ्य से जुडी हैं | अगर आप जहरीला खाना खाते है, तो हमारे शरीर को बहुत नुकसान होता हैं | जैव-तकनीकी से हम कोई भी चीजे उगा सकते है, बेच सकते हैं, इसमे हम प्रोफ़ेसर एच. एस. श्रीवास्तव फाउनडेशन की ओर से जो भी सहयोग चाहिए हम देने के लिए तैयार हैं |

गोष्ठी को जिलाधिकारी महोदय और श्री अतुल गुप्ता जी एवं श्री आलोक रंजन, पूर्व मुख्य सचिव उ०प्र० शासन ने भी संम्बोधित किया और इस अभियान को पूरा समर्थन देने की घोषणा की | सरकारी प्रतिनिधियों ने किसानो के प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया |

किसानों के साथ बातचीत

बैठक का आयोजन दिनांक- 30 अप्रैल 2022 को उज्ज्वला ग्लोबल एकेडमी, किसान पथ, मीसा रोड, नूरपुर बेहटा, गोसाईगंज प्रखंड, जिला लखनऊ में किया गया। बैठक में करीब 25 से अधिक किसान शामिल हुए। बैठक की शुरुआत पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. के महासचिव प्रो राणा प्रताप सिंह ने सभी सदस्यों के स्वागत के साथ की। प्रो. सिंह ने बैठक के उद्देश्यों के बारे में बताया और किसानों के विचारों पर चर्चा की एवं कृषि के साथ-साथ हमारी आय कैसे बड़े इसपर विचार व्यक्त किया। प्रो. सिंह ने किसानों के बीच एक समूह तैयार करने और उत्पादक से उपभोक्ताओं तक एक श्रृंखला विकसित करने और प्रदूषक और कीटनाशक मुक्त भोजन, फल और सब्जियां पैदा करने का प्रयास करने पर जोर दिया। प्रो. सिंह ने बताया कि बाजार में स्वस्थ अनाज की काफी मांग है और किसान इस दिशा में पहल कर सकते हैं। उन्होंने यह भी अवगत कराया कि वर्तमान में किसानों का भूमि क्षेत्र कम हो रहा है और जनसंख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, इसलिए फसल प्रणालियों को बदलने, मिश्रित एवं बहु-फसल चक्र को अपनाने एवं पारंपरिक फसलों के बजाय नकदी फसल की ओर बढ़ने की आवश्यकता बतायी। प्रो. सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कृषि के आगे और पीछे के संबंधों का आकलन करने की आवश्यकता है और निश्चित रूप से यह ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए सहायक होगा।

झारखंड कैडर के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी और पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. के सदस्य **डॉ एन के गुप्ता** ने सरकार के सहकारिता कार्यक्रम के अपने अनुभव साझा किए। डॉ. गुप्ता ने किसानों से "किसान पांजी" और "किसान प्रतिनिधि" तैयार करने को कहा। डॉ गुप्ता का कहना है कि वर्तमान समय में एक दूसरे के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि ग्रामीण क्षेत्र में किसी भी प्रकार की परियोजना के कार्यान्वयन और किसान पांजी की स्थापना अत्यंत आवश्यक हैं एवं इसके लिए डेटा सबसे महत्वपूर्ण चीज हैं और “किसान प्रतिनिधि निकट भविष्य में निश्चित रूप से उपयोगी होंगे।

डॉ. आर.डी. त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक राष्ट्रिय विज्ञान अकादमी भारत एवं पूर्व उपनिदेशक राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और उपाध्यक्ष पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. ने किसानों को बताया कि संस्थान वर्तमान में किन चीजो पर शोध कर रहा हैं, हमारे शोध से किसानों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से क्या लाभ होता है। डॉ त्रिपाठी ने एक उदाहरण दिया कि वैज्ञानिक कैसे आर्सेनिक मुक्त चावल की किस्मों को उगाकर पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र की आर्सेनिक समस्या को कम करते

हैं। उन्होंने यह भी बताया कि प्रयोगशाला अनुसंधान किस प्रकार कृषि के साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में सहायक है।

पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. के पूर्व निदेशक **डॉ. आर.एस. द्विवेदी** ने भविष्य में उर्वरक और कीटनाशक मुक्त फसलों के उत्पादन पर चर्चा की और बताया भविष्य में इसकी काफी मांग है। डॉ. द्विवेदी ने प्राकृतिक खेती की पद्धति पर प्रकाश डाला और किसानों से इसे अपनाने की बात कही, उनका कहना है कि प्राकृतिक खेती से फसलो का उत्पादन सुरुआत में धीमा होता है परन्तु आने वाले दिनों में यह उत्पादन धीरे-धीरे बढ़ता जाता है जिससे निश्चित हैं कि किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. के वैज्ञानिक **डॉ. राजेश बाजपेयी** ने किसानों को बताया कि फाउंडेशन किस तरह किसानों के लिए मददगार है एवं यह किसानों और वैज्ञानिक तकनीकों के बीच एक कड़ी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि फाउंडेशन आप लोगों को मशरूम की खेती, जैव उर्वरक विकास, फूलों की खेती, प्राकृतिक खेती आदि के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने में मदद करेगा। फाउंडेशन प्राकृतिक कृषि उत्पाद को बाजार तक पहुंचाने में भी मदद करता है।

डॉ. अमित कुमार, पोस्ट-डॉक्टोरल फेलो, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ और पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. के सदस्य, ने अपने स्वयं से विकसित वर्मी कम्पोस्ट उर्वरक का प्रदर्शन किया। डॉ. अमित ने किसानों को बताया कि कैसे हम आसान तरीके से वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर सकते हैं। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि वर्मिकम्पोस्ट के प्रयोग से हमारी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है और सिंथेटिक उर्वरकों का उपयोग कम होता है। वर्निकम्पोस्ट से जहा हम अपने खेत को बचा सकते है वही ज्यादा मात्र में इसे बनाकर पैसा भी कमा सकते हैं।

किसान प्रतिनिधि श्री वीरेंद्र कुमार और श्री नरेश, ने वज्ञानिको से कृषि संबंधित कई तरह के सवाल पूछे हैं एवं विशेषज्ञों ने उनकी जिज्ञासा को संत किया। श्री वीरेंद्र कुमार ने बताया कि हम प्रशिक्षण में रुचि रखने वाले किसानो और संसाधन सर्वेक्षण में भी मदद करेंगे एवं भविष्य के के लिए डेटा तैयार करेंगे हैं।

उज्ज्वला ग्लोबल एकेडमी के प्रबंध निदेशक श्री प्रदीप कुमार सिंह ने गांव के बच्चों के लिए शिक्षा की अपनी इच्छा शक्ति दर्शायी । उन्होंने बताया की उनके स्कूल में ज्यादातर छात्र किसान (कृषि) पृष्ठभूमि से आते हैं। श्री प्रदीप ने बताया कि, मैंने इस

पिछड़े क्षेत्र के बच्चों को शिक्षित करने को एक चुनौती के रूप में लिया है। श्री प्रदीप ने आर्थिक रूप से गरीब परिवार के मेधावी छात्र-छात्राओं को फीस में सहयोग के लिए प्रो. राणा सिंह को धन्यवाद दिया।

पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. से श्री आंचल कुमार जैन कोषाध्यक्ष, श्री कृष्णानंद सिंह और श्री रंजीत शर्मा भी उपस्थित थे और इन्होने किसानों के साथ चर्चा में भाग लिया।

अंत में डॉ राजेश बाजपेयी ने इस गर्म मौसम में विभिन्न गांवों से आने वाले किसानों को धन्यवाद दिया, साथ ही उन्होंने स्कूल परिसर में बैठक आयोजित करने के लिए श्री प्रदीप कुमार जी को हृदय से आभार जताया। उन्होंने विभिन्न संस्थानों से आने वाले सभी विशेषज्ञों को किसानों के साथ बातचीत करने और इस अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए भी धन्यवाद दिया। डॉ बाजपेयी ने इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने की अनुमति देने के लिए पी.एच.एस.एस.एफ.एस.एस. की आधिकारिक परिषद् के सदस्यों एवं अनुसंधान एवं विकास केंद्र कोर समिति के सदस्यों को धन्यवाद दिया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस- 2021

मोहनलालगंज के शंकरखेरा में दलित महिलाओं के साथ डॉ रोज मिंज

प्रो. एच. एस. श्रीवास्तव फाउंडेशन की युवा वैज्ञानिक डॉ. रोस मिंज के नेतृत्व में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (दिनांक 28 फरवरी, 2021) के अवसर पर शंकर खेड़ा (मोहनलालगंज ब्लाक), की ग्रामीण महिलाओं को पर्यावरण, पोषण और मशरूम उत्पादन की ट्रेनिंग दी गयी। गाँव की लगभग पैंतीस महिलाओं और कुछ बच्चों की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। महिलाओं को स्वच्छता और पर्यावरण का महत्व बताया गया, साथ ही उनको अपने घर के आँगन में पोषण वाटिका लगाने के लिए प्रेरित किया गया। ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार प्रदान करने हेतु कायेस्टर (ढींगरी) मशरूम उत्पादित करने के लिए भी ट्रेनिंग दी गई। ड़ीगरी मशरूम को उगाने की विधि अत्यन्त सरल और कम लागत पर शुरू की जा सकती है। महिलाएँ ट्रेनिंग कार्यक्रम में भाग लेकर अत्यन्त प्रसन्न हुई, वे भविष्य में ढींगरी मशरूम का उत्पादन भी करना चाहती हैं। ग्रामीण महिलाओं के दृष्टिकोण से यह जागरूकता और ट्रेनिंग का कार्यक्रम काफी लाभप्रद रहा। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के एम. एस. सी. पर्यावरण विज्ञान के छात्र श्री अमित कुमार ने भी कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। अन्त में कार्यक्रम की समाप्ति महिलाओं को धन्यवाद आभार व्यक्त कर किया गया।

01 September, 2019

ग्राम मँझरिया में समावेशी विकास की ग्रामीण पहल कार्यक्रम के तहत, फाउंडेशन द्वारा एक स्वास्थ एवं स्वच्छता गोष्ठी एवं मच्छरदानी वितरण का आयोजन किया गया। इसकी प्रेरणा एवं मुख्य आयोजन लखनऊ से आये प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह, संतोष कुशवाहा, गुड्डु कुशवाहा एवं अजय पांडेय ने किया।डॉ ए। के पाण्डेय, दुदही,सुदामा कुशवाहा, गौरीश्रीराम एवं श्री मौर्य दुलमआ पट्टी और मुन्ना शाही जी ने भे सभा को संबोधित किया।मुसहर महिलाओं ने गीत गाकर कार्यक्रम की शुरुआत की।

बीमारियों से बचाव के लिए करें मच्छरदानी का प्रयोग

जागरण संवाददाता, बभनौली, कुशीनगर : स्वच्छता मिशन की सफलता हमारे जीवन की सुरक्षा है। इसलिए साफ-सफाई का ध्यान हमें स्वयं करना चाहिए। संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए मच्छरदानी का प्रयोग जरूरी है।

यह बातें रविवार को दुदही विकास खंड के ग्राम पंचायत मंझरिया मुसहर बस्ती के लोगों के बीच समावेशी विकास की ग्रामीण पहल के अंतर्गत मच्छरदानी वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए लखनऊ से आए प्रो. राणा प्रताप सिंह ने कही। कहा कि संक्रामक बीमारियों के शिकार अधिकांश गरीब परिवार के लोग होते हैं, क्योंकि उनके पास संसाधन की कमी होती है। दुदही सीएचसी केंद्र के प्रभारी डा. एके पांडेय ने कहा कि संक्रामक बीमारियों के फैलने का कारण अशिक्षा है। कार्यक्रम को विश्व हिंदू परिषद के जिलाध्यक्ष दिग्विजय किशोर शाही, सुदामा कुशवाहा, मिश्री सिंह, संतोष कुशवाहा, मुन्ना कुशवाहा आदि

मुसहर महिला को मच्छरदानी देते दुदही सीएचसी प्रभारी डा. एके पांडेय ● जागरण

ने संबोधित किया। लगभग 100 मुसहर परिवारों में मच्छरदानी का वितरण किया गया। इंद्रदेव कुशवाहा, घनश्याम तिवारी, अशोक, पप्पू आदि मौजूद रहे।

खुले में बेची जा रही मीट व मछली:सुकरौली बाजार: प्रदेश सरकार जहां अवैध बूचड़खानों को बंद करने का निर्देश दे रखा है वहीं जिम्मेदार इस अभियान को पलीता लगाने में जुटे हैं। क्षेत्र के कई जगहों पर खुलेआम मांस व मछली की बिक्री हो रही है जबकि बिना लाइसेंस के खुले आम मांस व मछली की बिक्री प्रतिबंधित है। इन दुकानदारों द्वारा मांस व मछली की बिक्री करने के बाद अपशिष्ट वैसे ही छोड़ दिया जाता है जिससे दुर्गंध तो आती ही रहती है साथ में इनके द्वारा संक्रामक बीमारियों को खुलेआम निमंत्रण भी दिया जा रहा है। स्थानीय बाजार में तो साप्ताहिक बाजार सहित हाइवे के फोरलेन के सर्विस रोड व नहर के किनारे खुले में ही मांस व मछली की बिक्री की जाती है।

18th August, 2018

One rural center was established at Manjharia (Kushinagar) on 18th August, 2018. Tree plantation were done by the members of PHSS Foundation and resident of Manjharia on 15th August, 2018 in surrounded area of village.

10th April, 2018

10th December, 2017

3rd Center under Samaveshi Vikas ki Gramin Pahal Abhiyaan was inaugurated on 10th December, 2017 at Rampur Bakharia, Khurhat (Mau) in collaboration with PAS, PHSS Foundation and Geeta Educational Society, Dasbaari.

मऊ | आज का दिन 1901 में मारकोनी ने पहला वायरलेस संदेश कॉर्नवॉल (ब्रिटेन) से

खेती-बाड़ी के जानकारों से रूबरू हुए अन्नदाता, जाना रासायनिक उर्वरकों का नुकसान

जैविक खाद से मिट्टी होगी उपजाऊ

किसान गोष्ठी

खुरहट | हिन्दुस्तान संवाद

अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए किसान खेतों में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं। एक फसल में जितना रासायनिक खाद डालेंगे, दूसरी में उतनी ही पैदावार प्राप्त करने के लिए किसानों को सवा गुना खाद डालनी होगी। ऐसे में दिन प्रतिदिन खेतों के मिट्टी की उर्वरा शक्ति का दोहन होता जा रहा है। किसान बंधु जैविक खाद से खेती करके भी बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं और मिट्टी की जान भी बची रहेगी। यह कहना है बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर केंद्रिय विश्वविद्यालय लखनऊ के पर्यावरण विज्ञान के डीन डा. राणा प्रताप सिंह का। वह गीता एजुकेशनल सोसाइटी द्वारा क्षेत्र के दसबारी स्थित राष्ट्र गौरव अध्ययन केंद्र के सभागार में रविवार की शाम आयोजित किसान संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

मूंगफली शोध संस्थान जूनागढ़ एवं गन्ना शोध संस्थान लखनऊ के पूर्व वैज्ञानिक डा. आरएस द्विवेदी ने कहा कि इस्टीविया की खेती गन्ने से ज्यादा फायदेमंद है। इसमें गन्ने से 450 गुना अधिक मिठास है और कीमत उससे दोगुना अधिक मिलेगी। आजमगढ़ के कृषि वैज्ञानिक डा. रुद्र प्रताप सिंह ने केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा जैविक कृषि से संबंधित योजनाओं की जानकारी दी। कहा कि किसान जानकारी के अभाव में रासायनिक उर्वरकों का सर्वाधिक प्रयोग कर मिट्टी के उपजाऊ तत्वों को नष्ट कर दे रहे हैं। उन्होंने सरकार द्वारा जारी टोल फ्री नंबर 18001801551 पर किसानों को खेती से संबंधित समस्याओं के निदान के लिए कॉल करने को प्रेरित किया। कहा कि इस किसान कॉल सेंटर पर संपर्क कर फार्मर पोर्टल पर भी रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। इसका फायदा यह होगा कि जब कभी मौसम बदलेगा तो फसलों को बचाने का उपाय किसानों के मोबाइल पर मैसेज के जरिए आ जाएगा। मुहम्मदाबाद गोहना के वन क्षेत्राधिकारी ओमप्रकाश सिंह ने खेतों की मेड़ों पर सागौन व यूकेलिप्टस का पौध लगाकर आय बढ़ाने का आह्वान किया। कहा कि यह पौधे विभाग की नर्सरियों पर प्रति पौध सात रुपये में उपलब्ध हैं। इसके साथ ही उन्होंने छोटे-छोटे रकबों में कई जगह बिखरे खेतों के एकत्रिकरण पर जोर दिया। कहा कि वैज्ञानिकों व सरकार के नुमाइंदों के माध्यम से यह बात ऊपर तक जानी चाहिए, ताकि सरकार कोई योजना बना सके। जैविक विधि से गन्ना, मिर्च, सब्जी आदि की खेती कर अच्छी आय प्राप्त कर रहे क्षेत्र के दर्जन भर किसानों को शाल व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। सम्मान पाने वाले किसानों में रामकिशुन चौहान, रामशब्द यादव, शंकर राम, फूला देवी, विनय कुमार आदि शामिल थे। डायट प्राचार्य राजीव रंजन मिश्र, प्रशिक्षक अरविंद पांडेय, चंद्रधर राय, राजेंद्र राय, ग्राम प्रधान बृज नारायण दूबे व सुनील यादव ने भी किसानों से अपना अनुभव साझा किया। गीतकार राजू राय ने गीत के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता सेवानिवृत्त वन दरोगा राजाराम यादव व संचालन विनीत कुमार ने की।

खुरहट में किसान गोष्ठी में जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक रुद्र प्रताप सिंह। • हिन्दुस्तान

01st October, 2017

26-27th August, 2016

1. **Village Awareness Programmes & Kishan Gosthis at Kushinagar, Block Dudahi & Padrauna**

(i) There was a public meeting at village Kataura, Block Dudahi, Distt Kushinagar on 27th Aug, 2016 in which landless and small/marginal farm holding villagers interacted with experts and activists of 3 NGOs, PHSS Foundation, Lucknow, Vivekanad Yuva kalyan kendra, Padrauna, & Prithvipur Abhyuday Samiti, Lucknow. The villagers shared their problems with the visiting team and they were motivated by us to evolve a village samiti to deliberate, plan and manage the problems involving experts, activists and district administration. We encouraged a lot with their response and motivational level.

(ii) There was a public meeting at village Bindwalia (Mushar tola) Block Padrauna, Distt kushinagar on 26 Aug,2016 in which landless and small/marginal farm holding villagers interacted with experts and activists of 3 NGOs, PHSS Foundation, Lucknow, Vivekanad Yuva kalyan kendra, Padrauna,& Prithvipur Abhyuday Samiti, Lucknow. The villagers shared their problems with the visiting team and they were motivated by us to evolve a village samiti to deliberate, plan and manage the problems involving experts, activists

and district administration. About 70% active participants were women of a tribal community, named Mushar and located in Uttar Pradesh in Kushinagar District, in addition to Bihar and other eastern states of India. We encouraged a lot with their response and organizational skills.